से 2 घंटे तक (23%) और 710 उड़ानों में 2 घंटे से अधिक अवधि तक (27.2%) विलम्ब हुआ। ये विलम्ब मुख्यत: इंजीनियरी खराबी, मौसम और विमान क्षेत्र में भीड़-भाड़ के कारण हुए। पक्षी टकराव, वाणिज्यिक और विविध कारणों से भी विलम्ब हुए। यदि किसी उड़ान के आरंभ में विलम्ब हो जाए तो बाद में परिणामी विलम्ब होते रहते हैं और उस विमान को अन्य क्षेत्रों में प्रचालन करना होता है।

राजस्थान में वायुदूत सेवाएं

1092. **डा. अबरार अहमद :** क्या **नागर विमानन और पर्यटन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) इस समय कौन-कौन से स्थान वायुदूत सेवा से जुड़े हुए हैं ;

(ख) क्या सरकार को इस बात की जानकारी है कि सवाई माधोपुर में एक हवाई अड्डा है और साथ ही वहां रणथम्भौर टाइगर प्रोजेक्ट, पर्यटन केन्द्र, गणेश जी का विश्व का सबसे बड़ा मंदिर तथा रणथम्भौर का किला जैसे कई ऐतिहासिक और पर्यटक महत्व के स्थल इत्यादि स्थित हैं ;

(ग) यदि हां, तो उस स्थान से वायुदूत सेवायें शुरू न किए जाने के क्या कारण हैं ; और

(घ) इस स्थान से वायुदूत सेवायें कब तक शुरू हो जाने की संभावना है ?

नागर विमानन और पर्यटन मंत्री (श्री माधव राव सिंधिया) : (क) वायुदूत इस समय राजस्थान में जोधपुर और जैसलमेर के लिए परिचालन कर रहा है।

(ख) जी, हां।

(ग) और (घ) वायुदूत को हुई भारी हानि के कारण उसे बाध्य होकर अपने नेटवर्क में बहुत कमी करनी पड़ी है वर्तमान स्थिति में वायुदूत द्वारा नये स्टेशनों को जोड़ना व्यवहार्य प्रतीत नहीं होता है।

वायुदूत को हुए घाटे

1093. **डा. रत्नाकर पाण्डेय :** क्या **नागर विमानन और पर्यटन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) वायुदूत को अप्रैल, 1991 तक कितना घाटा हुआ और उसके क्या कारण हैं ;

(ख) सरकार अब तक वायुदूत में कुल कितनी पूंजी का निवेश कर चुकी है ;

(ग) क्या सरकार वायुदूत सेवायें समाप्त करने अथवा उसे किसी निजी कम्पनी को सौंप देने पर विचार कर रही है; यदि हां, तो उसका ब्यौरा क्या है; और

(घ) यदि हां, तो हुबली जैसे हवाई अड्डों को जिन पर इस समय वायुदूत की सेवायें चालू हैं वायुमार्ग से जोड़ने के लिए क्या वैकल्पिक योजनायें हैं ?

नागर विमानन और पर्यटन मंत्री (श्री माधव राव सिंधिया) : (क) 31 दिसम्बर, 1990 की स्थिति के अनुसार वायुदूत लिमिटेड का संचित घाटा लगभग 120 करोड़ होने का अनुमान है। घाटे के मुख्य कारण हैं –कम दूरी के परिचालन, पुराना और गैर किफायती बेड़ा, कम दूरी के परिचालनों के लिए अलाभकारी किराया ढांचा आदि।

(ख) वायुदूत लिमिटेड के पूंजी निवेश में सरकार की भागीदारी नहीं रही है।

(ग) और (घ) सरकार वायुदूत के भावी ढांचे के संबंध में विभिन्न विकल्पों पर विचार कर रही है। इस मामले में अभी कोई अंतिम निर्णय नहीं लिया गया है।